हिन्दी

(स्पर्श)(पाठ 6)(काका कालेलकर – कीचड़ का काव्य)
(कक्षा 9)

प्रश्न अभ्यास

खंड – क

प्रश्न 1:
कीचड़ के प्रति किसी को सहानुभूति क्यों नहीं होती ?
उत्तर 1:
कीचड़ में कोई भी पैर डालना पसंद नही करता इस कीचड़ से शरीर गंदा होता है, कपड़े मैले हो जाते हैं। अपने शरीर पर कीचड़ उड़े किसी को भी यह अच्छा नहीं लगता इसीलिए कीचड़ के प्रति किसी को सहानुभूति नहीं होती।

प्रश्न 2: जमीन ठोस होने पर उस पर किनके पदचिह्न अंकित होते हैं ?
उत्तर 2:
नदी किनारे जब कीचड़ सूख जाता है तब इस पर बगुले व अन्यपक्षी अपने पंजों की छाप छोड़ते चले जाते हैं तथा ये चिह्न दूर तक फैले कीचड़ पर साफ देखे जा सकते हैं और जब कीचड़ पूरी तरह सूख जाता हे तब गाय , भैंस , पाड़े , भेड़ बकरी आदि अन्य जानवरों के पदचिह्न दूर तक फैलकर प्राकृतिक शोभा को चार गुना सुंदर कर देते हैं ।

प्रश्न 3: मनुष्य को क्या भान होता जिससे वह कीचड़ का तिरस्कार न करता ?
उत्तर 3:
हम जो अन्न खाते हैं वह कीचड़ में ही पैदा होता है , भगवान पर चढ़ाया जाने वाला पुष्प कमल भी कीचड़ में पैदा होता है यदि हर मनष्य को इस बात का भान होता तो वह कीचड़ का तिरस्कार न करता ।

प्रश्न 4: पहाड़ लुप्त कर देने वाले कीचड़ की क्या विशेषता है ?
उत्तर 4:
गंगा के किनारे या सिंधु नदी के किनारे दूर तक काचड़ ही कीचड़ फैला देखा जा सकता है । लेखक के अनुसार यदि इससे भी मन न भरे तो खंबात पहुँचकर कीचड़ देखने की सारी इच्छा पूरी हो जाएगी वहाँ तो इतना कीचड़ देखने को मिलेगा कि उसके अंदर पूरा का पूरा हाथी ही डूब जाए ।

खंड – ख

प्रश्न 1:

कीचड़ का रंग किन–किन लोगों को खुश करता ह ?

उत्तर 1:

कलाकारों और प्रकृति की सुंदरता का महत्त्व समझने वो लों को कीचड़ के रंग की सुंदरता बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है । पुस्तको के गत्तों और खरीर के कपड़ों के लिए कीचड़ का रंग सबसे अच्छा माना जाता है मिट्टी के बर्तनों के ज्यादा पक जाने पर जो काला सा रंग नजर आता है तो कलाकार उसे वार्टमोन की संज्ञा प्रदान कर उसा गौरव बढ़ाते हैं ।

प्रश्न 2:

कीचड़ सूखकर किस प्रकार वेफ दृश्य उपस्थित करता ह ?

उत्तर 2:

नदी के किनारे पर जब कीचड़ सूख जाता है तो उसमें दरारें पड़ जाती है और वे टूटकर छोटे–छोटे टुकड़ों में खोपरों का रूप लेकर अत्यधिक सुदर लगतें हैं । दूर –दूर तक फैली यह सुदरता बरबस ही यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि कीचड़ भी इतना सुंदर हो सकता है ।

प्रश्न 3:

सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य किन स्थानों पर दिखाई देता है

उत्तर 3:

कीचड़ की वास्तविक सुदरता देखन हो तो गंगा किनारे या मही नदी के तट पर पहुॅच जाना चाहिए और इससे भी मन न भरे तो सीधे खंबात जाकर देखना चाहिए जहॉ दूर–दूर तक कीचड़ ही कीचड़ दिखाई देता है और प्राकृतिक संदरता को बढ़ाता रहता है ।

प्रश्न 4:

कवियों की धारणा को लेखक ने युक्तिशून्य क्यों कहा है ?

उत्तर 4:

कवियों की धारणा को लेखक ने युक्तिशून्य इसलिए कहा है क्योंकि वे कमल के ऊपर तो बड़ी–बड़ी उपमाएं देते हैं मगर उनसे कहा जाए कि कीचड़ को भी कोई उपमा दे तो नाक भौं सिकोड़ने लगतें हैं। ऐसी दोहरी मानकिकता वाला लेखक निश्चय ही प्रकृति पेमी नहीं हो सकता ।

खंड – ग

आशय स्पष्ट कीजिए

1.
नदी किनारे अंकित पदचिह्न और सींगों के चिह्नों से मानो महिषकुल के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास ही इस कर्दम लेख में लिखा हो ऐसा भास होता है।

उत्तर 1:
लेखक के अपुसार जब कीचड़ के ऊपर गाय ,भैंस या उने बच्चे आपस में लड़तें हैं तो उस स्थान पर जो लड़ाई के चिह्न अंकित होते हैं तो मानों ऐसा लगता है कि महिषासुर युद्ध भी इसी प्रकार हुआ होगा । जिसका सजीव चित्र सबके सामने साक्षात् उपस्थित है ।

2.
" आप वासुदेव की पूजा करते हैं इसलिए वसुदेव को तो नहीं पूजते, हीरे का भारी मूल्य देते हैं किंतु कोयले या पत्थर का नहीं देते और मोती को कंठ में बाँधकर फिरते हैं किंतु उसकी मातुश्री को गले में नहीं बाँधते! कम–से–कम इस विषय पर कवियों के साथ तो चर्चा न करना ही उत्तम! "

उत्तर 2:
लेखक के अनुसार ऐसे लेखकों का किसी सुदर वस्तु को देखकर उसकी उपमा देना और उसकों जन्म देने वाले की निंदा करना या उसें परहेज करना सदा गलत है यदि हम कमल को पुज रहे हैं तो हमें कीचड़ को भी पूजना चाहिए । यदि हम हीरे के महत्त्व को समझ रहें हैं तों हमें कोयले के महत्त्व को भी समझना होगा तभी हमारी कल्पना और योग्यता सार्थक है ।